23. ब्रिटिश भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार

- भारत में आधुनिक शिक्षा का आरंभ अंग्रेजों के द्वारा किया गया। इसमें मुख्यत: तीन एजेंसियां उत्तरदायी थी- विदेशी ईसाई मिशनरी, ब्रिटिश सरकार और प्रगतिशील भारतीय।

पृष्ठभूमि :

- एक व्यापारिक मुनाफा कमाने वाले संस्था के रूप में ईस्ट इंडिया कंपनी ने आरंभ में आधुनिक शिक्षा के विकास में नाम मात्र की दिलचस्पी ली। वारेन हेस्टिंग्स ने अपने प्रयासों से कलकत्ता मदरसा की स्थापना (1781) की। जिसमें अरबी, फारसी की शिक्षा दी जाती थी। 1791 में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- अंग्रेज धर्म प्रचारक और ईसाई मिशनरियों द्वारा भी शिक्षा प्रसार के प्रयत्न किए गए। कैरी, टॉम्स, मार्शमैन, वार्ड जैसे पादरियों ने कलकत्ता के निकट सिरामपुर में ईसाई धर्म एवं आंग्ल शिक्षा का प्रसार किया।
- इसी प्रकार राजा राममोहन राय, राधाकांत देव, तेजसचंद, रायबहादुर आदि के प्रयास से शिक्षा की प्रगति हुई।
- व्यक्तिगत एवं निजी संस्थाओं द्वारा शिक्षा के प्रसार से कंपनी ने भी शिक्षा के महत्व को समझा फलस्वरूप 1813 के एक्ट से कंपनी की शिक्षा नीति प्रारंभ हुई।

उद्देश्य :

- प्रशासन का खर्च कम करने की चिंता और इसके लिए सरकार शिक्षित भारतीयों की संख्या बढ़ाना चाहतीह थी। जिससे प्रशासन एवं ब्रिटिश व्यवहारिक प्रतिष्ठानों की छोटे कर्मचारियो की बड़ी एवं बड़ती हुई जरूरतों को पूरा किया जा सके। एक ऐसा वर्ग पैदा करना जो रक्त और रंग की दृष्टि से भारतीय मगर रूचि, विचारों एवं आचरण एवं बुद्धि की दृष्टि से अंग्रेज हो। ताकि यह वर्ग सरकार और शासितों के बीच दुभाषिये का काम कर सके।
- शिक्षित भारतीय इंग्लैड में बनी वस्तुओं के बाजार का भारत में विस्तार करेंगे।
- पाश्चात्य शिक्षा भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन को स्वीकार करने को प्रेरित करेगी।
- भारतीयों को सभ्य बनाए जाने के लिए शिक्षा का विकास करना था अर्थात् श्वेत नस्लीय अधिभार के सिद्धांत को प्रमाणिकता देना था।
- शिक्षा नीति का उद्देश्य औपनिवेशिक हितों की पूर्ति, न कि जनता के हित के लिए।

विकास :

- 1813 के चार्टर एक्ट के द्वारा सर्वप्रथम कंपनी के संचालकों ने भारतीयों को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व ग्रहण किया। इसके तहत् गवर्नर जनरल को भारतीयों पर 1 लाख रुपये की राशि शिक्षा कार्यों पर खर्च करने के लिए आवंटित की गई किन्तु इस धन का उपयोग वर्षों तक नहीं किया गया।
- बहुत दिनों तक यह निश्चित नहीं हो सकता कि 1813 के एक्ट द्वारा स्वीकृत राशि को किस प्रकार की शिक्षा के विकास पर खर्च किया जाय। अंग्रेज विद्वान एवं शासन अधिकारी ही नहीं बल्कि भारतीय विद्वानों का भी इस बारे में पारस्परिक मतभेद था। राजा राममोहन राय जैसे भारतीय एवं कुछ ब्रिटिश अधिकारी एवं कुछ ब्रिटिश अधिकारी अंग्रेजी शिक्षा को प्रारम्भ किया जाने के पक्ष में थे। परन्तु कुछ अंग्रेज और भारतीय ऐसे थी थे जो भारतीय भाषाओं व ज्ञान की शिक्षा पर सरकारी धन का व्यय चाहते थे। फलस्वरूप इन दोनों पक्षों में वाद-विवाद चलता रहा। यह विवाद आंग्ल-प्राच्य विवाद कहलाया। इस विवाद का अंत 1833 में विलियम बेंटिक के समय हुआ।

आंग्ल-प्राच्य विवाद (Orintalist Vs Anglicists)

- भारतीय शिक्षा संबंधी नीति निर्धारण के प्रश्न पर दो प्रमुख दल उत्पन्न हो गए थे, एक -प्राच्यवादी और दूसरा पाश्चात्यवादी।
- प्राच्यवादियों को नेतृत्व विल्सन व प्रिसेंप कर रहे थे जबकि आंग्ल (पाश्चात्यवादियों) का नेतृत्व ट्रेवेलियन कर रहा थ।
- विवाद के दो मुद्दे थे-शिक्षा का माध्यम क्या हो? भारतीय या अंग्रेजी तथा अध्ययन का विषय परंपरागत या पाश्चात्य।
- प्राच्यवादी : भारत में पाश्चात्य विज्ञान एवं ज्ञान का प्रसार भरतीय भाषाओं के माध्यम से किया जाय। वस्तुत: प्राच्यवादी वारेन हेस्टिंग्स एवं मिंटो की नीतियों को लागू करना चाह रहे थे। प्राच्य दल विज्ञान की शिक्षा एवं विकास का विरोध ी नहीं थी उसका कहना था। कि यूरोपीय ज्ञान विज्ञान को ऐसी भाषा के माध्यम से पढ़ाया जाय जिससे भारतीय परिचित हैं। उपयोग वस्तुओं का अंग्रेजी से अरबी और संस्कृत भाषाओं में अनुवाद किया जाय।
- प्राच्यवादियों ने स्कूलों की स्थापना की, भाषाओं को नियोजित

किया, भारत में छापाखाना और प्रकाशन कार्य आरंभ किया। पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा सम्पर्क के अन्य साधनों को विकसित किया। उन्होंने भारत कें प्रथम वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं का निर्माण किया। उनका प्रभाव नगरीकरण को प्रोत्साहन देने वाला और धर्म निरपेक्ष था अतः पाश्चात्यकीकरण के विरोधी होते हुए भी ब्रिटिश प्राच्यवादी भारतीय संस्कृति के आधुनिकीकरण में सहयोगी हुए।

- प्राच्यवादी ऐसी रचनात्मक योजनाओं का प्रस्ताव का रहे थे जिनसे विदेशी व भारतीय तत्वों के सार्थक जीवन मूल्यों के आधार पर स्वयं को परिवर्तित कर सके। इसलिए परिवर्तन की प्रेरणा केवल पश्चिमी देशों से ही नहीं परन् भारत की प्राचीन संस्थाओं का फिर से अध्ययन करके दी जा सकती थी।
- प्राच्यवादियों का मानना था कि यह परिवर्तन जिन व्यक्तियों के लिए किया जाय उनके लिए सार्थक हो चाहे उसकीप्रेरणा प्राचीन भारतीय मूल्यों से ली गई हो या समकालीन यूरोपीय विचारों से।
- प्राच्यवादियों का एक सर्वाधिक दीर्घकालिक योगदान था भारतीयों में ऐतिहासिक जागरूकता का विकास, भारतीयों में सामुदायिक भावना की जागृति। अपने प्राचीन स्वर्ण युग के पुनर्जागरण के विचारों से भारतीयों में आत्म सम्मान और आत्मविश्वास जागृत हुआ।
- वस्तुतः प्राच्यवादी कूटनीतिक कारणों से भी इस नीति का पालन कर रहे थे। संस्कृत, फारसी, अरबी साहित्य पर शिक्षा देकर भारतीयों को पूर्ववत् जातियों एवं धर्मो में विभाजित रखा जा सकता था जो नवनिर्मित ब्रिटिश साम्राज्य के हित में था। विल्सन नहीं चाहता था कि भारतीय अंग्रेजी पढ़कर अंग्रेजों के साथ समानता के धरातल पर खड़े हो सके।

आंग्लवादी :

- इस समय लॉर्ड मैकारेल गवर्नर जनरल की कौसिल के विधि सदस्य के रूप में 1834 में भारत आया वह पाश्चात्य भाषा एवं सस्कृति की सर्वश्रेष्ठता पर विश्वास रखता था। उसने शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा को चुना। उसके अनुसार भारतीयों कीप्रचलित देशी भाषाओं में साहित्यिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान कोष का अभाव है। उसने भारतीय भाषा एवं साहित्य की निकृष्टता दिखाने के लिए कहा कि ''एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक आलमारी भारत तथा अरब के संपूर्ण साहित्य के बराबर मूल्यवान थी।''
- इस तरह मैकाले एवं आंग्लवादियों ने पाश्चात्य शिक्षा एवं अंग्रेजी भाषा पर बल दिया अतः 1835 ई. में बेंटिक ने मैकाले के मत को स्वीकार किया। इस तरह प्राच्य-आंग्ल विवाद में आंग्लवादियों की जीत हुई तथा भारत में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति की स्थापना हुई।
- अब समस्या यह थी किसी एक वर्ग को ही शिक्षा दी जाय या संपूर्ण जनता को। इस संदर्भ में अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत (Downword Filtertion Theory) को अपनाया गया जिसका अर्थ था शिक्षा समाज के डचच वर्ग को दी जाय और इस वर्ग से छन-छन कर शिक्षा का प्रभाव जनसाधारण तक पहुंचे।
- किन्तु यह नीति असफल रही क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सरकारी पद प्राप्त हो जाता था। अतः वह अपने देशवासियों को शिक्षित करने का प्रयत्न नहीं करता था।
- अंग्रेजी विद्यालयों में शिक्षित व्यक्ति की विचारधारा में परिवर्तन हुआ और वह अपने लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने में असफल रहा। इसमें देशी विद्यालयों की अवहेलना की गई और सार्वजनिक शिक्षा के कार्यों को क्षति पहुंची।
- अतः 'अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत' को समाप्त कर ऐसी शिक्षानीति लाने की बात की गई जो सार्वजनिक शिक्षा का आधार बन गया। इसी क्रम में 1854 का Woods Dispatch आया।

चार्ल्स वुड घोषणा पत्र-1854

- 1854 से पूर्व डचच शिक्षा के विकास की गति धीमी रही। स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान नदीं दिया गया। अतः शिक्षा के विषद् सर्वेक्षण हेतु Board of Control के प्रधान चार्ल्स वुड की अध्यखता में एक समिति गठित हुई। इस समिति का सुझाव ही वुड घोषणा पत्र के नाम से जाना जाता है। यह 100 अनुच्छेदों का एक लंबा घोषणा पत्र था जिसमें शिक्षा के उद्देश्य माध्य सुधारों की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गयी। इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा गया।
- घोषणा-पत्र के अनुसार भारतीय शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रसार।
- महाविद्यालय के स्तर पर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी और आधुनिक भारतीय भाषाओं दोनों के माध्यम से होनी चाहिए।
- लंदन विश्वविद्यालय के नमूने पर विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाय।
- स्त्री शिक्षा का प्रसार किया जाय
- व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार के लिए स्कूल व कॉलेज खोले जाय

- अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक प्रांत में प्रशिक्षण विद्यालय का निर्माण किया जाय।

क्रियान्वयन :

- 1858 में कलकत्ता, मद्रास एवं बंबई में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई।
- 1854 से प्राइमरी शिक्षा के बजाय माध्यमिक एवं डचच शिक्षा पर अधिक बल दिया गया।
- 1856 में रूड़की एवं कलकत्ता में दो तकनीकी महाविद्यालय खोले गए।

वुड घोषणा पत्र को शिक्षा का मैग्नाकार्टा अर्थात् महाधिकार पत्र कहना अनुचित है। इसमें व्यापक साक्षरता के आदर्श को स्वीकारा नहीं गया था। प्राथमिक शिक्षा की अवहेलना की गई। शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान नहीं किए गए। तकनीकी शिक्षा बहुत सीमित रही। इस प्रकार वुड़ का घोषणा पत्र भारत के कल्याण से प्रेरित नहीं था। इसने भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादक एवं इंग्लैंड में बने माल के उपभोक्ता के रूप में माना।

हंटर कमीशन (1882) :

- 1882 में लॉर्ड रिपन के समय हंटर की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग का गठन हुआ। वस्तुत: 1854 के वुड घोषणा पत्र के अधीन जो कदम उठाए गए थे उनका मूल्यांकन करने के लिए हंटर कमीशन का गठन किया गया।
- आयोग ने प्राथमिक शिक्षा पर विशेष बल दिया। प्राथमिक शिक्षा उपयोगी विषयों तथा स्थानीय भाषा में दी जानी चाहिए। इस शिक्षा में निजी प्रयत्नों का स्वागत किया जाना चाहिए।
- महिला शिक्षा के अपर्याप्त विकास पर खेद प्रकट किया और इसे बढ़ाने पर बल दिया।
- डचच शिक्षा के संचालन से सरकार को हट जाना चाहिए।
- छात्रों को नैतिक शिक्षा देनी चाहिए। जिसमें सभी धर्मों के आवश्यक एवं मौलिक सिद्धांत शामिल हो।

कर्जन की शिक्षा नीति (विश्वविद्यालय आयोग 1902) :

- वस्तुत: प्रेस का विकास, शिक्षित भारतीयों द्वारा पत्रकारिता को महत्व देना, बढ़ता हुआ आम राजनीतिक असंतोष, कांग्रेस की स्थापना जैसी घटनाएं कर्जन के आगमन से पूर्व घटित हुई।
- अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के माध्यम से भारतीयों का परिचय पश्चिम से हुआ। कई ब्रिटिश प्रशासक आधुनिक शिक्षा प्रणाली को राजनीतिक असंतोष तथा आंदोलन के लिए उत्तरदायी ठहरा रहे थे। अत: यह धारणा बनती जा रही थी कि शिक्षा पर कठोर सरकारी नियंत्रण हो।
- ऐसे में कर्जन ने शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण लगाने के उद्देश्य से शिमला में एक सम्मेलन बुलाया और 1902 में टॉमस रैले के अधीन विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया। यह आयोग केवल डचच शिक्षा तथा विश्वविद्यालय तक ही सीमिति था। रैले कमीशन की सिफारिश के आधार पर 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (Indian Universites Act) पारित किया गया।
- इस अधिनियम ने विश्वविद्यालय प्रशासन के पुनर्गठन, विश्वविद्यालयों द्वारा महाविद्यालयों को अधिक कड़ा तथा व्यवस्थिति पर्यवेक्षण से संबंधित बातों पर जो दिया गया था।
- विश्वविद्यालय के उपसदस्यों की संख्या 50 से कम और 100 से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- विश्वविद्यालय पर सरकार का नियंत्रण बढ़ा दिया गया और सरकार को सीनेट द्वारा पारित प्रस्तावों पर निषेधाधिकार (Voto) दिया गया।

इस अधिनियम की भारतीयों द्वारा कटु आलोचना की गई क्योंकि इससे विश्वविद्यालयों की स्वतंत्रता समापत हो रही थी और डचच शिक्षा के विकास में बाधा पहुंचती। कर्जन की शिक्षा नीति का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो जाता है। कि उसने डचच शिक्षा की अपेक्षा प्राथमिक शिक्षा पर शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों पर व्यावसायिक शिक्षा की अपेक्षा कृषि शिक्षा पर जोर देना अधिक आवश्यक समझा क्योंकि ब्रिटिश राज का विरोध करने वाले शहरी शिक्षित भारतीय थे।

1913 का शिक्षा संबंधी घोषणा पत्र :

- इसमें कहा गया कि प्रत्येक प्रांत में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी।
- राष्ट्रवादियों की अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की मांग को अस्वीकार किया गया। सरकार का उद्देश्य निरक्षरता के प्रसार को रोकना है, घोषित किया गया।
- केवल प्रांतीय सरकारों को यह प्रोत्साहन दिया गया कि वे समाज के पिछले तथा गरीब वर्ग को नि: शुल्क शिक्षा देने का प्रबंध करें।

सैडलर आयोग (1917) "Calcutta Universites Act" :

- 1917 में सरकार ने माइकल सैडलर की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया। इसे कलकत्ता विश्वविद्यालय की शिक्षा की जांच का कार्य सौंपा गया। इस आयोग में डा. आशुतोष मुखर्जी तथा डा. जियाउद्दीन अहमद नामक दो

भारतीय सदस्य भी थे।

- कलकत्ता विश्वविद्यालय के अतिरिक्त माध्यमिक एवं डचच शिक्षा, स्त्री शिक्षा, अध्यापकों के प्रशिक्षण, औद्योगिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के संबंध में भी अपने विचार रखे।
- इंटर परीक्षा को माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा के बीच की विभाजक रेखा माननी चाहिए अर्थात् स्कूल की शिक्षा 12 वर्ष की होनी चाहिए।
- स्नातक की शिक्षा त्रिवर्षीय होनी चाहिए।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय पर भार को कम करने के उद्देश्य से ढाका में विश्वविद्यालय खोलने का सुझाव दिया।
- शिक्षा के क्षेत्र में मुसलमानों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए इन्हें प्रोत्साहन देने की बात की गई।
- स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

हार्टोग कमीशन (1928) :

- 1919 के एक्ट के तहत् द्वैध शासन के अंतर्गत शिक्षा विभाग को भारतीय मंत्रियों के नियंत्रण में रखा गया। फलत: शिक्षण संस्थाओं की संख्या में तेजी से विस्तार हुआ। शिक्षित व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हुई, परन्तु शिक्षा के स्तर में कमी भी आई। अत: 1928-29 में हार्टोग की अध्यक्षता में एक समिति गठित हुई।
- प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया जाय तथा सुधार एवं एकीकरण की नीति अपनाई जाय।
- ग्रामीण प्रवृति के विद्यार्थियों को महाविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने से रोकना चाहिए। उन्हे मिडिल स्कूल तक ही शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्हे औद्योगिक एवं व्यावसायिक शिक्षा देना चाहिए।
- विश्वविद्यालयों को सुधारने के प्रयासों और डचच शिक्षा योग्य विद्यार्थियों को दी जाय।

वर्धा योजना (बेसिक शिक्षा योजना) (1937) :

- 1937 में जनता द्वारा चुनी गई सरकारें व मंत्रिमंडलों की स्थापना हुई। अनेक प्रांतों में कांग्रेस की सरकारें गठित हुई फलत: गांधी जी ने हरिजन ये लेख लिखकर वर्धा ये एक सम्मेलन आयोजित किया।
- इसमें 7-14 वर्ष के बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की बात की गई।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी स्वावलंबी बन सके।
- विद्यार्थियों को उनकी अभिरूचि के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा दी जाय।

यह शिक्षा योजना इस आशा से तैयार की गई थी कि ग्राम एवं शहर के मध्य स्वस्थ संबंध तैयार होगा गांवों की व्यावसायिक अवनिति को रोकना संभव होगा। धनी एवं निर्धनों के बीच कोई अप्राकृतिक विभाजन नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति को जीवित रहने भर के लिए पर्याप्त मजदूरी प्राप्त हो सकेगी। किन्तु यह योजना द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ होने तथा कांग्रेस मंत्रिमंडलों के त्याग पत्र दने के कारण प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई।

सार्जेण्ट योजना (1944) :

- भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार जॉन सार्जेण्ट ने एक शिक्षा योजना तैयार की।
- इसके अनुसार विश्वविद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अभी और विस्तार किए जाने की आवश्यकता थी।
- 6-11 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं के लिए व्यापक नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था हो।
- गरीब छात्रों को पर्याप्त वित्तीय सहायता देने की बात कही गई।
- इस योजना के अनुसार देश में 40 वर्षों के अंदर शिक्षा के पुनर्निर्माण का कार्य पूरा करना था।

कमजोर पक्ष :

- शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी कमजोरी था आम जनता की शिक्षा की उपेक्षा।
- 1911 में भारतीय आबादी के 94% लोग निरक्षर थे जबकि 1931 में 92% इसका कारण यह था कि शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी पर बहुत अधित जोर दिया गया।
- शिक्षा प्रणाली अत्यधिक महंगी थी अत: धनी वर्ग एवं शहरी लोगों का इस पर एकाधिकार हो गया।
- अंग्रेजी भाषा पर अधिक बल देने से शिक्षित भारतीय और जनसाधारण के बीच अंतर बढ़ गया।
- स्त्री शिक्षा की अवहेलना की गई। लड़कियों की शिक्षा के लिए धन की कोई व्यवस्था नहीं की गई ऐसा इसलिए हुआ कि विदेशी अधिकारियों की नजर में स्त्री शिक्षा की कोई तात्कालिक उपयोगिता नहीं थी क्योंकि स्त्रियों को सरकारी दफ्तरों में क्लर्क नहीं बनाया जा सकता।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा की उपेक्षा की गई। 1857 तक देश में केवल 3 मेडिकल कॉलेज एवं 1 इंजीनियंरिग कॉलेज था और उसके उदरवाजे यूरोपवासियों के लिए खुले हुए थे।
- सरकार ने शिक्षा पर बहुत ही कम खर्च का प्रावधान किया 1886 में अपनी लगभग 47 करोड़ रूपयों की निबल आय

में से 1 करोड़ रूपए शिक्षा पर खर्च किए गए।

पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव

नकारात्मक :

- अंग्रेजी शिक्षा पर अत्यधिक बल देने से शिक्षित व्यक्ति एवं साधारण लोगों के बीच दरार पड़ गई।
- आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले कुछ नवयुवकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। उन्होने पुराने मानदण्डों एवं आदर्शों का बहिष्कार किया, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण किया। निषेधात्मक दृष्टिकोण अपनाकर उन्होंने प्राच्य विचारों को अबौद्धिक ठहराया। परन्तु नए प्रगतिशील सिद्धांत का निर्माण भी न कर सके। अत: उनके व्यक्तिगत जीवन में अराजकता आ गई।
- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उपाधि प्राप्त करना था। परीक्षा में सफलता को शिक्षा के साथ उलझा दिया।
- शिक्षा अत्यधिक साहित्यिक व अव्यवसायिक रही, जिससे भारत की औद्योगिक और आर्थिक आवश्यकताओं तथा शिक्षा कोई सामजस्य नहीं रहा। अत: भारत में ऐसे शिक्षित युवकों की बड़ी संख्या खड़ी हो गई जिनके सामने विकास का कोई उपयुक्त मार्ग नहीं था।
- अंग्रेजी शिक्षा भारतीय समस्याओं का राष्ट्रीय समाधान सुझाने में असफल रही।
- ब्रिटिश शासन को आदर्श के रूप में माना गया। ब्रिटिश इतिहास के अध्ययन पर बल दिया गया। फलत : राष्ट्रीय भावनाओं के उदय को प्रोत्साहन नहीं मिला।
- हिन्दू-मुसलमान के बीच वैमनस्य बढ़ा। मुस्लिम वर्ग के बहुत सीमित अंश ने आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण था-उनमें शिक्षा का अभाव जबकि हिन्दूओं की बड़ी संख्या ने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की और सरकारी सेंवाओं को प्राप्त किया।

सकारात्मक प्रभाव :

- अंग्रेजी व अंग्रेजी भाषा में अनुवादित ग्रंथों के अध्ययन से भारतीयों का ज्ञानवर्धन हुआ और उन्हे एक विश्वजनित दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।
- भारतीयों को डार्विन, स्पेंसर, लॉक, स्मिथ, रस्किन, रसेल इत्यादि को पढ़ने का मौका मिला जिससे लोकतांत्रिक सिद्धांतों से प्रेरित होकर वे प्रतिक्रियावादी सामंती संस्थाओं एवं परम्पराओं के विरुद्धउठ खड़े हुए।
- शिक्षित भारतीयों ने रिकार्डो, लीस्ट, मार्क्स के अर्थशास्त्र संबंधी सिद्धांतों का अध्ययन किया और औद्योगीकरण तथा नवीन आर्थिक समसयाओं के स्वरूप की पहचान करने की समझ बढ़ी। इसी संदर्भ में औपनिवेशिक शासन की आर्थिक नीति की मीमांसा हुई और धन की निकासी के रूप में उसके स्वरूप को उद्घाटित किया।
- भारत में एक शिक्षित मध्यम वर्ग के उदय को प्रोत्साहन मिला।
- पत्रकारिता, प्रेस आदि को बढ़ावा मिला।
- अंग्रेजी शिक्षा ने विभिन्न प्रांतीय भारतीयों को एक सामान्य भाषा प्रदान की और उसे वृहतर विश्व के साथ जोड़ दिया।
- भारतीय राष्ट्रवाद के विकास के अनेक कारणों में से यह एक था। आरंभिक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्वकर्ता इस आधुनिक शिक्षा की उपज था।

निष्कर्षत: ब्रिटिश शिक्षा नीति औपनिवेशिक हितों से पश्चिालित थी। यह ब्रिटिश के व्यापक सांस्कृतिक नीति का अंग थी। जिसका उद्देश्य देशी लोगों को यह महसूस करानां था कि वे सास्कृतिक दृष्टि से पश्चिम के लोगों की तुलना में पिछड़े हुए हैं। फिर भी भारतीय जनजीवन पर इसका सीमित सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

अंग्रेजी शिक्षा एवं राष्ट्रवाद

- अंग्रेजी शिक्षा और राष्ट्रवाद को लेकर प्राय: चर्चा की जाती है कि इस शिक्षा ने भारतीय जनता के भीतर राष्ट्रीयता की भावना को जन्म दिया। इसी सदंर्भ में यह प्रश्न उठता है कि भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में अंग्रेजी शिक्षा का कहां तक योगदान था। यदि भारत में अंग्रेजी शिक्षा का अस्तित्व न होता तो क्या भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हो सकता था? इस संदर्भ में ब्रिटिश विद्वानों का मानना है कि राष्ट्रीय भावनाएं अपने आप में भारत की भूमि पर जीवित नहीं हुई वरन् वे एक विदेशी उपज थी जो विदेशी हाथों एवं प्रभावों से बोर्ड गयी। अत: ब्रिटिश राज और उसके अन्तर्गत विदेशी प्रभुत्व के बिना भारतीय राष्ट्रवाद के उदय की कल्पना करना कठिन है।
- राष्ट्रवाद का उद्भव अंग्रेजी शिक्षा का प्रत्यक्ष परिणाम था। और अंग्रेजी शिक्षा में ऐसे बुद्धिजीवी वर्ग को जन्म दिया जो विचारों को आत्मसात् करने के लिए तत्पर था। भारत में या इग्लैण्ड में या अन्य देशों के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीयों ने राष्ट्रवाद के सिद्धांत को ग्रहण किया। ब्रिटिश इतिहास तथा राजनीतिशास्त्र का अध्ययन करने से भारतीय बुद्धिजीवियों को इन सिद्धान्तों का ज्ञान हुआ।
- शिक्षित भारतीयों ने अंग्रेजी जनतांत्रिक साहित्य का अध्ययन किया जिसके कारण राष्ट्रीय आन्दोलन को जनतांत्रिक आधार मिला यहीं से उन्हें निर्वाचन,मताधिकार, समाचार पत्रों, प्रतिनिधि सरकार आदि के लिए आन्दोलन की प्रेरणा

मिली। अत: अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से ही जनतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास हुआ। साथ ही इस शिक्षापद्धति ने उन शिक्षित भारतीयों को जो देश के विभिन्न कोनों में थे आपस में विचार-विर्मश करने का माध्यम दिया जिससे राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

- उपरोक्त मत के विपक्ष में विद्वानों का कहना है कि अंग्रेजी शिक्षा की भूमिका प्रगतिशील थी किंतु यह सत्य नहीं है कि भारतीयों में राष्ट्रवाद का जन्म किसी एक कारण से हुआ है। चीन फारस, यूनान, टर्की एवं अन्य देशों के इतिहास से स्पष्ट हो जाता है कि जिन देशों में अंग्रेजी शिक्षा का कोई अस्तित्व नहीं था वहां भी राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।
- जहां तक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वर्ग की बात है तो भारत में इस वर्ग की संख्या अत्यनत सीमित थी। 1930 तक भारत की जनसंख्या के केवल 2% व्यक्ति ही अंग्रेजी बोल या समझ सकते थे। ये शिक्षित एवं व्यवसायी वर्ग शहरों के निवासी थे और इन्होंने उसने भारतीय भाषा बोलने वाली जनसंख्या से संपर्क भी नही रखा। इसी कारण प्रारम्भिक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन सशक्त नहीं बन सका। जहां कही भी राष्ट्रीय आन्दोलन में जन आन्दोलन का रूप धारण किया उसमें अंग्रेजी भाषा का लेश मात्र कोई योगदान नहीं था। दूसरी बात कि अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों के बीच खाई पैदा की। हिन्दू मुसलमानों के बीच वैमनस्व बढ़ाया फिर समग्र भारतीयों को एकजुट करने में इसकी भूमिका कैसे हो सकती है।
- भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म कुछ विशेष परिस्थितियों को कारण हुआ जिसका वातावरण ब्रिटिश शासन काल में तैयार हुआ। वस्तुत: भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन साम्राज्यवाद और उनकी शोषणमूलक व्यवस्था से उत्पन्न हुआ था। शिक्षा व्यवस्था चाहे जैसे रहती भारतीय बुर्जुआ वर्ग का उदय और ब्रिटिश बुर्जुआ वर्ग के प्रभुत्व के खिलाफ उसकी बढ़ती हुई प्रतिद्वंद्विता अवश्यंभावी थी। अगर भारतीय वुर्जाआ वर्ग को दूसरी सारी विचारधाराओं में अलग संस्कृत, फारसी में लिखे ग्रंथों से ही शिक्षा मिलती रहती तो उन्हें वहीं अपने संघर्ष के सिद्धांत और नारे भी मिल जाते।
- अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय जीवन को प्रभावित किया इसमें संदेह नहीं किंतु यह शिक्षित वर्ग अपने हितों को सुरक्षित रखने के लिए तत्पर था। शिक्षित बुद्धिजीवी वर्ग ने सामाजिक धार्मिक सुधारों को देश सेवा का माध्यम बनाया, राजनीतिक जनान्दोलन का नहीं।
- भारत में वास्तव में राष्ट्रवाद का जन्म विभिन्न स्वार्थों के वस्तुनिष्ठ संघर्ष का परिणाम था। अंग्रेजो का स्वार्थ यह था कि भारत को आर्थिक राजनीतिक रूप से गुलाम रखा जाए और भारतीय जनता का हित इसमें था कि वह ब्रिटिश शासन से मुक्त हो। हितो की इस टकराहट ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया।

निष्कर्ष :

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का प्रत्यक्ष एवं अनत्य परिणाम नहीं था। यह कहना इतिहास की दृष्टि के विरुद्ध होगा केवल अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीयों में राष्ट्रवाद पैदा हुआ। यदि अंग्रेज शासकों ने भारतीयों को शिक्षित करने का प्रयत्न न भी किया होता तो भी विदेशी शासन के विरूद्ध राजनीतिक आन्दोलन अवश्यंभावी था। अंग्रेजी शिक्षा का योगदान केवल परोक्ष रूप में था क्योंकि इसने भारतीयों को पाश्चात्य राजनीतिक जीवन का ज्ञान दिया।